गुरु गोविन्द

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

ज्ञान के बिना मानव अधूरा है। ज्ञान ही मानव को पूर्ण मानव बनाता है। अन्य प्राणियों से ज्ञान ही एक ऐसा तत्व है, जो मानव को अलग करता है। ज्ञान कैसे प्राप्त हो यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है? मानव के अन्दर गुरु ज्ञान का दीपक जलाता है, जिससे मानव पूर्ण मानव बनता है। जितने भी महापुरुष हुये हैं, उनके भीतर ज्ञान का दीपक जलाने वाले कोई न कोई गुरु रहे हैं। शिवाजी को शिवाजी बनाने वाले समर्थ गुरु रामदासजी, स्वामी विवेकानन्द को विवेकानन्द बनाने वाले रामकृष्ण परमहंस थे। सरस्वती मां ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी है। उनकी आराधना से ज्ञान प्राप्त होता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊंचा बताया गया है क्योंकि गुरु ही ईश्वर का ज्ञान कराता है। कबीरदासजी ने लिखा है–

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय।

बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

कबीरदासजी ने गुरु का स्थान गोविन्द से भी ऊपर बताया है। यदि किसी शिष्य के सामने गुरु और गोविन्द दोनों उपस्थित हों तो सर्वप्रथम गुरु को प्रणाम करना चाहिए। गुरु इसलिए पूजनीय है कि उसने गोविन्द का ज्ञान कराया है। यदि गोविन्द के बारे में ज्ञान ही न होता तो हम किसकी पूजा करते। इसलिए गुरु ही श्रेष्ठ है। गुरु जीवात्मा, परमात्मा और ईश्वर का ज्ञान कराते हैं। जड़, चेतन के भेद का ज्ञान गुरु कराता है। जड़, चेतन को एक मानना अज्ञान है। पंचेन्द्रियों सुखों को सुख मानना अज्ञान है।

गुरु ही जीवात्मा को अन्तरात्मा का ज्ञान करा देता है। जीव को पौरुष का ज्ञान कराने वाला, पुरुषार्थ की शिक्षा देने वाला गुरु होता है। सुबह से शाम तक हम कर्म करते रहते हैं, फिर भी सुखानुभूति नहीं होती ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए की पूर्वजन्म में हमने जो कर्म बीज बोये हैं, वह परिणाम के रूप में इस जन्म में अवश्य प्राप्त होता है। कभी–कभी पुरुषार्थ को या पुरुषार्थ के

परिणाम को पूर्वजन्म के किये हुए कर्मों के परिणाम अवरूद्ध कर देते हैं। इसलिए वर्तमान जीवन में किये गये कर्मों का परिणाम हमें प्राप्त नहीं हो पाता। जब तक पूर्वकृत कर्मों का भोग नहीं हो जाता तब तक भाग्योदय भी नहीं होता। इसलिए जीवन में सदैव सत्कर्म ही करना चाहिए।

दादा भगवान् के अनुयायी उन्हें ईश्वर के रूप में पूजते हैं। उन्हें विश्व दर्शन हुआ और दर्शन के महत्वपूर्ण विषय इनके मन में स्वयं स्फुटित हो गये। मैं कौन हूं? ईश्वर कौन है? संसार कौन चलाता है? कर्म क्या है? मोक्ष क्या है? इत्यादि संसार के आध्यात्मिक प्रश्नों का सम्पूर्ण रहस्य इनके मन में प्रकट हुआ। इनका दार्शनिक सिद्धांत अक्रम विज्ञान कहलाता है। अक्रम विज्ञान का अर्थ है क्रम के बिना ही मोक्ष को प्राप्त कर लेना। इस सिद्धांत में निचली सीढ़ी से छलांग लगाकर ऊपर की सीढ़ी पर एक बार में ही पहुंचा जा सकता है। इस विज्ञान को दादा भगवान ने दिया है।

दादा भगवान चौदह लोकों के स्वामी हैं। वे आपमें भी हैं, हममे भी हैं, और सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप से रह रहे हैं और हमारे भीतर सम्पूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। उन्होंने एक ऐसा जीवनोपयोगी सूत्र दिया है– भुगते उसी की भूल। इस जगत में भूल किसकी चोर की या जिसका चोरी हुआ उसका? इन दोनों में से भुगत कौन रहा है? जिसका चोरी हुआ वहीं भुगत रहा है। चोर तो पकड़े जाने के बाद भुगतेगा और उसके कृत्य का दण्ड उसे मिलेगा। आज खुद की भूल का दण्ड मिल गया। खुद भुगते तो फिर दोष किसे देना। भूल है, तब तक भुगतना पड़ता है। जब भूल खत्म हो जायेगी, तब इस दुनिया की कोई भी शक्ति भुगतने के लिये दण्ड नहीं देगी।

ईश्वर का कानून वास्तविक कानून है। इस संसार में हम एक दूसरे को धोखा दे सकते हैं, झूठ बोल करके और झुठी गवाही देकर न्यायालय से मुक्त हो सकते हैं। किन्तु जो वास्तविक न्यायाधीश है, जो सबकुछ देख रहा है, उसके न्याय से हम कैसे मुक्त हो सकते हैं? हमारे कर्म का दण्ड तो हमे ही भुगतना पड़ेगा, हम चाहे या न चाहे। ईश्वर के कानून में कोई परिवर्तन नहीं कर सकता, वह शाश्वत कानून है। उसका सिद्धांत है जो करे सो भरे अर्थात् जो जैसा करेगा उसको वैसा भोगना पड़ेगा।

विनम्रता और अनुशासन का पाठ गुरु शिष्य को सिखाता है। विद्या विनम्रता से ही आती है। भगवान राम ने लक्ष्मण को रावण के पास ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेजा था। लक्ष्मण जब रावण के पास गये तो उसके सिर के पास खड़े हो गये। रावण ने लक्ष्मण की तरफ देखा ही नहीं। लक्ष्मण वापस आ गये। भगवान राम ने लक्ष्मण से पूछा कि वहां जाकर कहां खड़े थे। लक्ष्मण ने कहा रावण के सिर के पास। भगवान राम ने कहा ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी के सिर के पास नहीं बल्कि पैर के पास खड़ा होना चाहिए। लक्ष्मण जब पुनः रावण के पास जाकर उसके पैर के पास प्रणाम करके खड़े हुए, तब रावण ने उन्हें ज्ञान और शिक्षा दी। अतः ज्ञान प्राप्त करने के लिए गुरु के प्रति आदर का भाव होना आवश्यक है। गुरू और गोविन्द दोनों पूजनीय हैं। गुरु का स्थान गोविन्द से भी श्रेष्ठ है। इसलिए गुरु की पूजा होती है।